ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मेधामयासिषम्। सामवेद 171
मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूँ।
May I attain superior intellect.

वर्ष 37, अंक 20 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 अप्रैल, 2014 से रविवार 20 अप्रैल, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

वैदिक संस्कृति ही मनुष्य को मनुष्यता की शिक्षा देती है – डॉ. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति

श्रेष्ठ विचार ही दर्शन और तदनुसार आचरण ही धर्म है – डॉ. धर्मवीर

आर्यसमाज की सर्वोच्च शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव समारोह 12-13 अप्रैल, 2014 को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ। इस अवसर पर आयोजित चतुर्वेद शतक यज्ञ डॉ. सोमदेव शतांशु जी के ब्रह्मत्व में आयोजित हुआ। उन्होंने कहा कि यज्ञ तीन रूपों में निरन्तर हो रहा है सम्पूर्ण विराट ब्रह्माण्ड में, आध्यात्मिक शरीर में तथा आहूति आदि देकर भौतिक रुप में। उपनिषद् में इसीलिए कहा गया ''यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे''। आध्यात्मिक शरीर तथा भौतिक यज्ञ द्वारा ही विराट ब्रह्माण्ड से तादात्म्य स्थापित करना इसका उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ कर्म है। उन्होंने कहा कि यज्ञ के माध्यम से ही आत्मा और शरीर दोनों को सुन्दर बनाया जा सकता है। भजन पं. सहदेव बेधड़क के हुए।

परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान डॉ. धर्मवीर ने अपने मुख्य भाषण में कहा कि मनुष्य के कर्त्तव्याकर्त्तव्य की बात वेदों में तथा मनुस्मृति में कही गई है। उपनिषद् वाक्य ''ईशावास्यमिदं सर्वं'' की व्याख्या करते हुए डॉ. धर्मवीर ने कहा कि श्रेष्ठ विचार ही दर्शन है और तदनुसार आचरण ही धर्म है। जीवन का व्यवहार यदि अच्छे परिणाम वाला है वो ही श्रेष्ठ धर्म भी है। उन्होंने कहा कि किसी भी वस्तु के जब उचित अर्थ को जानकर हम व्यवहार करते हैं तो उचित परिणाम भी पाते हैं।

उन्होंने कहा कि चारों वेद मुनष्य जीवन के बराबर ही पुराना है, उसी समय से मनुष्य जीवन में समस्या रहीं, आज भी हैं साथ ही उसी समय से समाधान रहे, आज भी हैं। हमारा नजरिया बदल गया है। उन्होंने आगे कहा कि आज संस्कारों का अभाव हो गया है, इसके लिए नई पीढ़ी को दोष नहीं दिया जा सकता। हम अपने बच्चों को डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर आदि सब कुछ बना रहे हैं लेकिन संस्कारवान् मनुष्य नहीं बना रहे। हमारी शिक्षा में वैदिक मूल्यों, मानव मूल्यों की कमी हो गई है। श्रेष्ठ आजीविका प्राप्त कर लेना श्रेष्ठ मनुष्य बन जाना नहीं है। वैदिक शिक्षा में यदि हम मातृ-देवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, पति देवो भव, पत्नी देवो भव और अतिथि देवो भव को ग्रहण कर लें तो हमारे घर में ही मंदिर की स्थापना हो जाएगी। इससे सामाजिक व्यवस्था भी सुधरेगी। उन्होंने कहा कि हमें पत्थर की मूर्तियों के मंदिर में जाने की आवश्यकता नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य है स्वविवेकी और प्रखर बुद्धिमान् होना। यदि आचार्य कोई ग़लत शिक्षा दे तो उसका विरोध करने की साम्र्थ्य भी होनी चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने कहा कि ओ३म् का स्मरण करने से ही सब कुछ प्राप्त हो जाता है। प्रभु की शरण में ही सम्पूर्ण आनन्द है। हमें अपनी संस्कृति और संस्कृत की रक्षा के लिए तत्पर रहना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल ने कहा कि कर्मयोनि और भोगयोनि; ये दो प्रकार की योनि में मनुष्य विचरण करता है। हमारा आदर्श मानव का निर्माण करना होना चाहिए। हमारा आचरण श्रेष्ठ होगा तो हमारी संतान भी श्रेष्ठ होगी।

कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि गुरुकुल हमेशा से मनुर्भव की शिक्षा देता आया है। वैदिक संस्कृति ही श्रेष्ठ है जिसमें मनुष्य को मनुष्यता की शिक्षा दी जाती है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ

– शेष पृष्ठ 8 पर

आदिवासी क्षेत्र में आर्यसमाज की शिक्षा क्रान्ति में बहुमूल्य भेंट

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया, जिला- झाबुआ (म.प्र.)

प्रथम सत्र का आरम्भ एवं आशीर्वाद समारोह : 29 अप्रैल प्रातः 11 बजे

मुख्य अतिथि : महाशय धर्मपाल जी, चेयरमैन एम.डी.एच.

आर्य वीर/वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीरों हेतु
25 मई, 2014 से 1 जून, 2014 तक
स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सै. -7, रोहिणी, दिल्ली-85

आर्य वीरांगनाओं हेतु
18 मई से 25 मई, 2014
स्थान : दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार, दिल्ली-95

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने बालक/ बालिकाओं को व आर्य वीर/वीरांगना दल शाखा के प्रत्येक आर्यवीर एवं वीरांगना को शिविर मे भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

निवेदक

जगवीर आर्य	बृहस्पति आर्य	जितेन्द्र भाटिया	सुन्दर आर्य	आ. सुनीति आर्या	लिपिका आर्या	शारदा आर्या	स्नेह भाटिया
संचालक	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	सहसंचालक	संचालिका	मन्त्राणी	कोषाध्यक्षा	सह संचालिका

वेद-स्वाध्याय

सृष्टि की उत्पत्ति

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

तम आसीत्तमसा गूळ्हमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्। तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम्।। ऋग्वेद 10/129/3

अर्थ—(**अग्रे**) सृष्टि से पूर्व (**तमसा**) अन्धकार से (**गूढम्**) आवृत (**तम आसीत्**) तमस्=अन्धकार रूप था (**इदम् सर्वम्**) यह सब उस समय (**सलिलम् आः**) फैले जल-सा व्यापक गतिमान् तत्त्व था जो (**अप्रकेतम्**) न जानने योग्य था (**तुच्छ्येन**) तुच्छ, सूक्ष्म रूप से (यत् अपिहितम्) ढका हुआ था (**आभु**) आभु नाम से अव्यक्त उपादान कारण (**आसीत्**) था जिससे यह सृष्टि आविर्भूत, प्रकट हुई (**तपसः**) परमात्मा के ज्ञानमय तप से (**तत् महिना**) महत्तत्व एक रूप उत्पन्न हुआ।

कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं होता। साथ ही उसका कर्त्ता भी होना चाहिये। जैसे घड़ा कार्य रूप होने से मिट्टी और कुम्भकार के सहयोग से ही उसकी निर्मिति होती है। किसी भी वस्तु के निर्माण में तीन कारण होते हैं—

१. उपादान कारण—वस्तु के निर्माण में जो मूल तत्त्व है उसे 'उपादान कारण' कहते हैं। जैसे घड़े के निर्माण में मिट्टी और आभूषण में सोना-चान्दी आदि उपादान कारण है। ऐसा सर्वत्र जानना चाहिये।

२. निमित्त कारण—जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने, प्रकारान्तर से दूसरे को बनादे उसे निमित्त कारण कहते हैं। इसके दो भेद हैं—मुख्य निमित्तकारण—परमात्मा, साधारण निमित्त कारण आत्मा। निमित्त कारण चेतन होता है।

३. साधारण कारण—निमित्त और उपादान कारण के अतिरिक्त अन्य अपेक्षित कारण साधारण कारण कहलाते हैं। जैसे घड़े के निर्माण में दण्ड, चक्रादि

सृष्टि की रचना में प्रकृति उपादान कारण, ईश्वर निमित्त कारण और जीव साधारण निमित्त कारण है। मन्त्र प्रलयावस्था का वर्णन करते हुये रचना का प्रारम्भ कैसे हुआ इसका वर्णन करता है। ऋग्वेद के इस सूक्त को नासदीय सूक्त कहते हैं। इसमें प्रलयावस्था और सृष्टि निर्माण की प्रारम्भिक अवस्था का जिस गम्भीरता से वर्णन हुआ है, उसे देख आधुनिक खगोल विद्या के वैज्ञानिक भी चकित हैं।

सृष्टि की आयु चार अरब, बत्तीस करोड़ वर्ष मानी गई है। और इतने ही वर्षों तक प्रलय रहती है। मन्त्र कहता है **तम आसीत् तमसा गूढमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्** प्रलयावस्था में प्रकृति साम्यावस्था में रहती है। इस समय चारों ओर अन्धकार ही था। सभी जीव प्रसुप्त अवस्था में थे।

इसी बात को मनुस्मृति में स्पष्ट किया है—

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातम लक्षणम्। अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः॥ मनु० १.५॥

प्रलयावस्था में यह सब कुछ अन्धकार में लीन था। तब यह इन्द्रियों से नहीं जाना जा सकने योग्य था। वह तर्क का विषय नहीं था। और सब कुछ प्रसुप्तावस्था अर्थात् सोये हुये के समान था। मूल तत्त्व सलिल अर्थात् जैसे जल अपना धरातल सम रखता है वैसे ही जल के समान व्यापक गतिमान् तत्त्व था। पदार्थ की यह ऊर्जावस्था होने से तरंगमय स्थिति जाननी चाहिये। आधुनिक विज्ञान पदार्थ और ऊर्जा को एक वस्तु के रूपान्तरित भेद मानता है। ऊर्जा भी कण और तरंग दोनों प्रकार की मानी जाती है। जल के समान तरंगायित अवस्था कहने से यही प्रतीत होता है कि इस समय प्रकृति की साम्यावस्था में ऊर्जा के तरंग (Waves) रूप में उपादान कारण विद्यमान था जिसमें सूक्ष्म क्रिया चल रही थी।

यह कारण द्रव्य फैला हुआ होने पर भी **तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्** परमात्मा के एक अंश मात्र में ही था और अनन्त आकाश के एक देश में ही सीमित था। इससे विदित होता है कि समस्त ब्रह्माण्डों की प्रलय और उत्पत्ति एक साथ नहीं होती। इनकी उत्पत्ति और प्रलय का क्रम चलता ही रहता है। एक सूर्य के ग्रह-उपग्रह मिलकर एक ब्रह्माण्ड कहलाते हैं। हमारी आकाश-गंगा में सूर्य जैसे लाखों नक्षत्र खोजे जा चुके हैं। ऐसी करोड़ों आकाश-गंगाएं इस अनन्त ब्रह्माण्ड में विद्यमान हैं। गतिशील होने से इनकी आकृति गोलाकार जैसी दिखाई देती है इसलिये इन सभी लोक-लोकान्तरों को भी ब्रह्माण्ड कहा जाता है। वैदिक साहित्य में इसे 'हिरण्यगर्भ' कहा गया है।

ब्रह्मा की रात्रि के अन्तिम [सौवें] भाग में **तपसस्तन्महिनाऽजायतैकम्** परमात्मा के तप [ईक्षण क्रिया] से यह अण्डाकार द्रव्य महत्तत्व के रूप में उत्पन्न हुआ। हिरण्यगर्भ रूप अण्डे में विस्फोट हुआ और वह दो भागों में विभाजित हो गया। ऊपर वाले भाग से द्युलोक और नीचे के भाग से पृथिवी की उत्पत्ति हुई।

प्रारम्भ में पृथिवी का द्रव्य अत्यधिक उष्ण और पिलपिला, लहराता हुआ था। इसके धीरे-धीरे ठण्डा हो जाने से ऊपर वाला भाग शीतल और कठोर होता चला गया। जैसे दूध के ऊपर मलाई आ जाती है। पृथ्वी के ठण्डी हो जाने से आकाशस्थ जलीय वाष्प वर्षा के रूप में बरसने लगे और विशाल समुद्रों का निर्माण हुआ। उस समय पृथिवी पर चारों ओर जल ही जल था। केवल हिमालय का मेरु शिखर जिसे तिब्बत कहते हैं, रहने योग्य होने से सर्वप्रथम मानव की उत्पत्ति वहीं पर हुई।

सृष्टि की प्रलय और उत्पत्ति में जो निमित्त कारण है उसका भी यत् किञ्चित् ज्ञान प्राप्त करना उपयोगी रहेगा। इसी सूक्त के अन्तिम मन्त्र में इसका वर्णन किया है—

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न। यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अंग वेद यदि वा न वेद।

ऋ० १०.१२९.७॥

यह सृष्टि जिस उपादान कारण से उत्पन्न हुई है इसका जो अध्यक्ष है, वह महान् आकाश में विद्यमान है। हे जिज्ञासु! वह परमात्मा ही सृष्टि की उत्पत्ति कर इसे धारण कर रहा है और वही इसका संहार, प्रलय करता है। जो मनुष्य उस परमेश्वर को सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करने वाला मानता है वह परमेश्वर को प्राप्त होता है। जो उसको नहीं जानता वही दुःख को प्राप्त होता है। जो आकाश के समान व्यापक है, उसी ईश्वर में सब जगत् निवास करता है। जब प्रलय होता है तब भी सब जगत् कारण रूप होके ईश्वर के सामर्थ्य में रहता है और फिर भी उसी से उत्पन्न होता है। (ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, सृष्टिविद्या विषय)

- क्रमशः

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -
आर्यसमाज 'ए' ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली द्वारा एकत्रित दान राशि

928	सर्वश्री एन.के. निझावन	1000	945	गुप्तदान	500
929	श्रीमती अंजू सूद	2100	946	गुप्तदान	200
930	सत्य न. भारद्वाज	500	947	छिब्बर जी	100
931	श्रीमती शशि तनेजा	2500	950	कम्बोज परिवार	200
932	मनोज कुमार	2000	951	आ. सी. हसीजा	1000
933	श्रीमती वसुन्धरा वधवा	2000	952	विक्रम नरुला	500
934	दीपक वधवा	2000	953	चण्डोक परिवार	500
935	वीरेन्द्र सरदाना	2500	954	सी.डी. रखेजा	200
936	यज्ञप्रिय मनचन्दा	200	955	कपूर परिवार	500
937	मनोज गक्खड़	2100	956	श्रीमती राज	100
938	श्रीमती सुषमा कुमार	500	957	गुप्तदान	50
939	तरुण सूद	1100	958	श्रीमती राजरानी	1000
940	रिजवाना खतून	500	959	राजपाल मक्कड़	500
941	जगदीश कोछड़	1100	960	धर्मवीर घई	500
942	खन्ना परिवार	500	961	सुश्री खुशी (आस्ट्रेलिया से)	500
943	श्रीमती सुदेश चड्ढा	500	962	श्रीमती सावित्री चौधरी	500
			963	श्रीमती जानकी	500
			964	सब्बरवाल जी	1000
			965	श्रीमती शशि गुप्ता	200

- क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। - *महामन्त्री*

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

124वें जन्मदिवस (14 अप्रैल) पर विशेष

अनोखा व्यक्तित्व : डॉ. भीमराव रामजी अम्बेदकर

- मनमोहन कुमार आर्य

14 अप्रैल सन् 1891 को जन्मे डॉ. भीमरावरामजी अम्बेदकर जी की 124 वीं जयन्ती है। वह भारत के पहले कानून मंत्री रहे। भारत के संविधान के निर्माण व उसका प्रारूप तैयार करने में उनकी प्रमुख भूमिका थी। भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना में भी उनका मुख्य योगदान था। वह दलितों, पिछड़े, निर्धनों व दु:खियों के मसीहा थे। उन्होंने जीवन में अनेकानेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये जिनसे देश व समाज प्रभावित हुआ। बहुत से कार्य वह करना चाहते थे व चाहते होंगे परन्तु उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। एक कार्य तो यह चाहते थे कि समाज से सामाजिक असमानता, छुआछूत, अस्पर्शयता, ऊंचनीच, छोटे-बड़े की भावना समाप्त होकर सारा देश एक भाव, एकविचार, सर्व-स्वीकार्य एक मत-धर्म, भाषा व जीवनशैली, सबका एक सुख-दुख व एक हानि-लाभ को स्वीकार करे व अपनायें। परन्तु यह कार्य अब तक कुछ बड़े लोगों के कारण सफल नहीं हो सका। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने भी अपने साहित्य व शंका-समाधान आदि में ऐसे ही विचार व्यक्त किये थे कि ऐसा होने पर ही देश व विश्व का पूर्ण हित हो सकता है व होगा। हिन्दुओं की जन्म पर आधारित जन्म-जाति व्यवस्था के बारे में सन् 1875 के आसपास उन्होंने कहा था कि 'ये वर्ण व्यवस्था आर्यों के लिए मरण व्यवस्था है। देखें इस डाकिन से आर्यों (हिन्दुओं) का पीछा कब छूटता है?' हम समझते हैं कि देश में यदि अस्पर्शयता न होती डॉ. अम्बेदकर जी देश व समाज के लिए और अधिक उपयोगी कार्य कर सकते थे। वह अपने जीवन में जितना कार्य कर सके उसके आधार पर हम उन्हें न्यायविद्, राजनेता, दर्शनिक, anthropologist, इतिहासकार तथा अर्थ-शास्त्री आदि अनेक विशेषणों से युक्त महनीय पुरुष कह सकते हैं। लगभग 63 वर्ष की आयु में ही उन्होंने इतने कार्य किये हैं इससे उनका जीवन आदरणीय, सम्मानीय, श्रद्धा व अनेकानेक युवकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

राष्ट्र नायक डा. अम्बेदकर जी 14 अप्रैल 1891 को महू-मध्यप्रदेश में जन्में थे। आप अपने पिता श्री रामजी सकपाल एवं माता श्रीमती भीम बाई की 14 वीं व अन्तिम सन्तान थे अर्थात् भाई बहिनों में सबसे छोटे थे। तर्क व विज्ञान के आधार पर भी यही परिणाम निकलता है कि छोटी सन्तान सबसे अधिक मेधावी व योग्य होती है। आपका परिवार 'महर' जाति से सम्बन्धित एक निर्धन परिवार था तथा धार्मिक विचारधारा से आप कबीर पन्थी थे। पिता की आपको प्रेरणा थी कि वह हिन्दू मत के शास्त्रों में वर्णित वर्ण-व्यवस्था व जाति प्रथा का अध्ययन करें। आपका परिवार महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के स्थान का रहने वाला था। पिता व परिवार के अन्य लोग ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेना में कार्यरत थे। आपको बाल्य काल में शिक्षा प्राप्त करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके साथ जो भी भेद-भाव किसी भी रूप में हुए, वह सब अनुचित व दु:खद थे, उन्हें अमानवीयता की संज्ञा दे सकते हैं। महर्षि दयानन्द ने जिस गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था को अध्ययन-अध्यापन के लिए प्रस्तुत किया उसमें उनका कहना था कि राजा का पुत्र हो या किसी निर्धन, दलित व पिछड़े परिवार का, सबको समान आसन, समान भोजन, समान वस्त्र व अन्य सभी सुविधायें एक समान रूप में मिलनी चाहिये। यदि समानता नहीं होगी तो यह अधर्म है व अनुचित कार्य है। यह विचार उन्होंने सन् 1875 में व्यक्त किये व अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखे हैं। आर्य समाज के इस समय लगभग 1,500 से अधिक गुरुकुलों में इस व्यवस्था का पालन किया जाता है जिसका परिणाम है कि आज वेदों के अध्ययन पर पण्डित वा ब्राह्मण वर्ग का एकाधिकार समाप्त होकर देश व समाज में दलित व पिछड़ें वर्गों से सम्बन्धित अनेक वेदों के भाष्यकार, विद्वान, अध्यापक आदि महान आशय वाले लोग हैं। सन् 1894 में अम्बेदकर जी के पिता सेना से सेवानिवृत्त होकर परिवार सहित सतारा आकर रहने लगे। यहां दो वर्ष बाद आपकी माताजी का देहान्त हो गया। भीमराव जी इस समय मात्र 5 वर्ष के बालक थे। आपकी चाची ने आपका व अन्य भाई-बहिनों का पालन-पोषण किया। आप अपने नाम के अम्बावादेकर शब्द का प्रयोग करते थे। आप एक जन्मना-ब्राह्मण अध्यापक महादेव अम्बेदकर के प्रिय छात्र थे। उन्होंने आपका नाम में अम्बावादेकर के स्थान पर अम्बेदकर कर दिया और यही शब्द स्कूल के अभिलेख में अंकित किया। यही शब्द सदा जीवन आपके नाम के साथ शोभायमान रहा। आप कोलम्बिया विश्वविद्यालय एवं लन्दन के स्कूल आफ इकोनोमिक्स में अध्ययन किया और यहां से विधि, अर्थशास्त्र एवं राजनीति शास्त्र में स्नातक हुए तथा इन वि यों में अध्ययन व अनुसंधान कर आप डाक्टरेट की उपाधि से अलंकृत हुए। आपने सन् 1918 में मुम्बई के College of Commerce & Economics में राजनीति एवं अर्थशास्त्र का अध्यापन भी कराया। आपके अध्ययन से आपके छात्र अत्यन्त प्रभावित थे और आपके व छात्रों के परस्पर अत्यन्त मधुर सम्बन्ध थे। सन् 1926 में आपने वकालत आरम्भ की व इसमें सफलता प्राप्त की। आपने 1920 में ''मूक नायक'' (Leader of the silent) नामक पत्र प्रकाशित कर अस्पर्शयता निवारण के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया। कोल्हापुर के महाराजा शाहूजी (1874-1922) ने आपको इस कार्य व अन्य गतिविधियों में आर्थिक सहयोग प्रदान किया। यह ज्ञातव्य है कि शाहूजी आर्य समाज व आर्य विचारधारा के अनुयायी थे।

अर्थशास्त्र पर आपने तीन पुस्तकें लिखी जिनके नाम थे - Administration & Finance of the East India Company, The Evolution of Provincial Finance & British India and The Problem of Rupee – Its origin and its solution. रिजर्व बैंक आफ इण्डिया सन् 1934 में स्थापित हुआ जो कि डा. अम्बेदकर के विचार एवं अनुमानों, कल्पनाओं व आइडियाज पर आधारित था। इसके लिए उन्होंने आवश्यक feedback आदि Hilton Young Commission को दिये थे। डा. अम्बेदकर जी की भारतीय संविधान के निर्माण में प्रमुख भूमिका थी। वह पहले कानून मंत्री थे। उन्होंने काश्मीर के सम्बन्धित विशेष दर्जा देने वाली धारा 370 का खुलकर विरोध किया था। इसके लिए नेहरूजी उनको मना नहीं पाये थे। इससे उनके व्यक्तित्व का अनुमान होता है। अस्पर्शयता का विरोध उन्होंने किया। यह एक अमानवीय समाजिक कुप्रथा थी जिसका महर्षि दयानन्द सहित अनेक महापुरुषों ने विरोध किया। खेद है कि आज भी समाज में यत्र-तत्र इसके दर्शन होते हैं और जिन लोगों को इसका विरोध करना चाहिये, जिनके कारण यह विद्यमान है, वह विरोध नहीं कर रहे हैं। ऐसे लोगों को क्या कहा जाये? यह कैसा वैज्ञानिक युग व आधुनिककाल है कि यह अमानवीय कुप्रथा आज भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है। हमें लगता है कि आज की आधुनिक शिक्षित युवा पीढ़ी इसे आने वाले समय में समाप्त करेगी।

डॉ. भीमराव अम्बेदकर जी ने सामाजिक विषमता के विरुद्ध आन्दोलन किया और अंहिसा को प्रधानता देने वाले बौद्धमत को ग्रहण किया। आपको 1990 में भारत रत्न की देश की सर्वोपरि उपाधि प्रदान कर गौरवान्वित किया गया। आर्य समाज के शीर्षस्थ विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती आपके प्रशंसक थे। आप दोनों में परस्पर मधुर सम्बन्ध थे। पौराणिकों व आर्य समाज में जब कभी कुछ विषयों पर मतभेद हुआ तो आपने आर्य समाज के विचारों का समर्थन किया। डा. अम्बेदकर जी का सुश्री शारदा कबीर जी से विवाह हुआ था। यह विवाह दिल्ली में आपके निवास पर हुआ था। शारदाजी ब्राह्मण परिवार में जन्मी थीं। आपके पुत्र श्री यशवन्त एवं पोते का नाम अम्बेदकर प्रकाश यशवन्त है। वह भारतीय संसद के दोनों सदनों के सदस्य रहे हैं। डा. अम्बेदकर जी को मधुमेह रोग था। आप जून से अक्तूबर, 1954 में गम्भीर रूप से रुग्ण हुए और बिस्तर पर ही रहे। इस रोग से आपकी आंखें भी प्रभावित हुई जिससे आप पढ़-लिख नहीं सकते थे। सन् 1955 में आपका स्वास्थ्य और अधिक गिर गया। इस प्रकार सन् दिसम्बर 1956 आया जब एक दिन रात्रि को सोते हुए ही आपने नक्वर शरीर छोड़ दिया। 7 दिसम्बर 1956 को मुम्बई के दादर, चौपाटी में आपकी अन्त्येष्टि हुई। आपकी पत्नी की मृत्यु सन् 2003 में हुई।

- शेष पृष्ठ 8 पर

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

भारतीय लोकतन्त्र के महोत्सव : लोकसभा निर्वाचन-2014 पर व्यंग्यात्मक लेख

राजनीति-उद्योग में रोजगार की अर्जी

आजकल यों तो देश में सैंकड़ों उद्योग-धंधे पनप रहे हैं लेकिन जो उद्योग सबसे अधिक आकर्षक और फलदायक है, वह है राजनीति-उद्योग। जिस किसी ने भी यह उद्योग स्थापित किया या इसमें काम किया वह थोड़े समय में ही हर तरह से माला-माल हो गया। आपका मन भी ललचा रहा होगा कि अगर आप भी इस लाइन को पकड़ लेते तो आज पता नहीं कहाँ-से-कहाँ होते! लेकिन, दूसरे उद्योगों की तरह अब इस उद्योग जगत में भी कुछ उद्योगों का एकाधिकार हो गया है। परिणामत:, अगर आप नया उद्योग लगाएँगे तो कम्पीटीशन में नहीं ठहर सेकेंगे। इसलिए आप के हित को ध्यान में रखते हुए मेरा सुझाव है कि पहले किसी पुराने उद्योग में घुस जाइए और बाद में मौका देखकर अपनी नई यूनिट लगा लीजिए या किसी के साथ साझेदारी कर लीजिए। नए उद्योगों में धड़ाधड़ अर्जी देने में आपको कोई दिक्कत न हो और अपका सिलैक्शन भी हो जाए, इसके लिए मेरी सेवाएँ हाजिर हैं। नीचे अर्जी का नमूना दिया जा रहा है, उसमें ऊपर की तरफ मनचाहे राजनीति-उद्योग का और नीचे अपना पता भरकर फौरन भेज दें। अर्जी का नमूना पेश है:

सेवा में,

सुपर प्रबन्धक, वायदा-बिखेर राजनीति-उद्योग,
दाँव-पेंच भवन, कुटिल नगर, नई दिल्ली - 420.

महोदय शिरोमणि,

अत्यन्त विश्वसनीय सूत्रों से पता लगा है कि आप, धड़ल्ले से चल रहे अपने राजनीति-उद्योग में, कुछ नए रंगरुटों की भर्ती के लिए बेचैन हैं। माननीय! यह तो जग जाहिर है कि आप जाने-माने राजनीति -उद्योगपति हैं और आपका उद्योग लेटैस्ट तिकड़म टैक्नीक और झांसा-पट्टी पर आधारित है। यही वजह है कि नई तिजोरियों की सप्लाई आने से पूर्व ही आपकी पुरानी तिजोरियाँ भर जाती हैं। सर! ऐसे सम्पन्न उद्योग के लिए आपको जिस तरह के अनुभवी कार्यकर्त्ता की जरुरत है, मैं बिल्कुल वैसा ही हूँ। मेरी योग्यताओं का विवरण नीचे दर्ज है:

1. जन्म : (क) माँ की कोख से जन्म 45 साल पहले
(ख) राजनीतिक जन्म - 25 वर्ष पहले

2. आयु - ऊपर के आंकड़ों से स्पष्ट है कि वास्तविक आयु 45 वर्ष और राजनीतिक आयु 25 वर्ष है। दरअसल जन्मजात न होकर सैल्फमेड राजनीति-उद्योगकर्मी हूँ। शुरु के 20 साल इस दृष्टि से बेकार गए इसलिए राजनीतिक आयु मात्र 25 वर्ष है।

3. शैक्षिक योग्यताएँ - मेरी अद्‌भुत प्रतिभा को स्कूल हजम नहीं कर सका इसलिए नौंवी कक्षा के दौरान ही स्कूल से रवाना कर दिया गया था। हिंदी पढ़ लेता हूँ और अंग्रेजी में हस्ताक्षर करने में ऐक्सपर्ट हूँ। जरुरत पड़ने पर दूसरों के भी असली हस्ताक्षर कर सकता हूँ।

4. व्यावसायिक योग्यताएँ (जो घर-बैठे ही अपनी तगड़ी पहुँच से प्राप्त की हैं)

परीक्षा का नाम	**बोर्ड या विश्वविद्यालय**
(क) **छल भूषण** (समकक्ष : मैट्रिक)	कपटपुर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
(ख) **अवसर शिरोमणि** (समकक्ष: बी.ए.)	दलबदल विश्वविद्यालय, कुटिल नगर
(ग) **निर्लज्ज स्वामी** (एम. ए. के बराबर)	फरेब नगर यूनिवर्सिटी

इसके अतिरिक्त पलटीवाड़ा प्रबन्धक स्कूल से अर्थभक्षण, भूमि-हड़पन और जातिवाद में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा प्राप्त किया है और क्षेत्रवाद, संप्रदायवाद तथा भाषावाद के अधिकारी विद्वानों की गाइडेन्स में स्पेशल ट्रेनिंग ली है।

5. प्रकाशित रचनाएँ

(क) **दलबल माहात्म्य** (ख) **विपक्षी की टाँग कैसे खीचें** (पुरस्कृत)
(ग) **विरोधी को गाली निज उन्नति का मूल**
(घ) **रोजी-रोटी: खद्दर का कुर्ता गाँधी टोपी**
(ड.) **गठबन्धन करने की नवीनतम टैक्नीक**
(च) **गठबंधन तोड़ने के अचूक नुस्खे।**

6. पुरस्कार - (अ) **चापलूसी और मक्खन-लेप कला** में अभूतपूर्व योगदान के लिए चमचा शिरोमणि पुरस्कार से अलंकृत।

(ब) **उठा-पटक** के कौशल का बड़ा वैज्ञानिक प्रदर्शन करने के उपलक्ष्य में धूर्त श्री की उपाधि से सम्मानित।

7. अन्य योग्यताएँ और विशेषताएँ - किसी भी राजनीति-उद्योग में फूट डालना, धांधली मचाना-मचवाना, सभाएँ भंग करवाना, नारे लगवाना, समर्थन या विरोध में भीड़ इकट्ठी करना, गिरगिट की तरह रंग बदल सकना, उल्लू सीधा न होने पर पार्टी का निलिप्त भाव से त्याग करते हुए नई पार्टी में बेशर्मी के साथ घुस जाना, बीस फुट की दूरी से, विपक्षी पर कुर्सी का सटीक निशाना साध सकना, किसी भी राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए पाँच से लेकर सैंकड़ों सूत्रों तक का कायक्रम पेश कर सकना, हस्ताक्षर अभियान चला सकना और हस्ताक्षर कम पड़ जाने पर हजारों हस्ताक्षर खुद कर सकना, बिना झिझक के बयान बदल सकना; खुले आम गाली देते रहने के बाद भी, जरुरत पड़ने पर, विरोधी के आगे दुम हिला सकना और उसे महापुरुष बता सकना; मौका पड़ने पर मतदाताओं का कीमती वोट की कीमत दे सकना; उद्‌घाटनकर्ता के रुप में आमन्त्रित करवा सकना; गड़बड़ी पकड़ी जाने पर अभिनन्दन समारोहों का तांता बंधवा देना और अपने मालिक की छवि को जनतानुकूलित रखना; ज्ञान-विज्ञान, धर्म-दर्शन आदि से संबंधित सभी कार्यक्रमों का उद्‌घाटन कर सकना, देशी-विदेशी महात्माओं, साधु-संतो तथा कवियों-लेखकों आदि की जन्म और पुण्यतिथियों पर बोल सकना तथा इन महापुरुषों द्वारा बताए गए रास्ते से बिलकुल अपरिचित होने पर भी जनता को उस मार्ग पर चलने की सीख दे सकना; इन विषयों के साथ-साथ इसी तरह के बहुत-सारे दूसरे विषयों का अद्‌भुत ज्ञान और उन्हें अमल में लाने का बेमिसाल अनुभव।

8. कार्यानुभव - ऊपर संख्या 7 में गिनाए विषयों के व्यावहारिक परीक्षण के साथ-साथ अनेक मशहूर राजनीति-उद्योगों की सेवा करने का दीर्घकालीन अनुभव। विस्तृत विवरण इस प्रकार है-

उद्योग का नाम	**सेवा-काल**
(क) **स्वांग्रेस** (और उसकी उप-शाखाएँ)	10 वर्ष
(ख) **धन संघ**	4 वर्ष
(ग) **भारतीय मौकानिष्ट पार्टी**	3 वर्ष
(घ) **शोषणिष्ट पार्टी**	2 वर्ष
(ड.) **भ्रांति दल**	1.5 वर्ष
(च) **अखिल भारतीय टंटा पार्टी**	1 वर्ष
(छ) **परलोक दल**	0.5 वर्ष
(ज) **बहुजन पार्टी**	2 वर्ष
(झ) **नमाजवादी पार्टी**	1 वर्ष
कुल	**25 वर्ष**

इन राजनीतिक उद्योगों में कार्य करने के दौरान **मारकवादियों** और **अपब्लिकनों** से भी सहानुभूतिपूर्ण संबंध रहा है। इसके अतिरिक्त अपने उद्योग-स्वामियों के यहाँ घरेलू जिम्मेदारियाँ निभाने का भी गहरा अनुभव है। मिसाल के तौर पर डाक पहुँचाने, बच्चों को स्कूल से लाने-ले जाने से लेकर मालकिन और मुन्नी को घुमाने तक का मधुर अनुभव।

9. नाटकीय स्वभाव - आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र और आधुनिक सरकार के ड्रामा स्कूल को पछाड़ते हुए, रिरियाने, गिड़गिड़ाने तथा खीस निपोरने की बेमिसाल ऐक्टिंग। विस्मयादि बोधक शब्दों के विशाल भंडार के साथ चेहरे का ठीक तालमेल बैठा सकने का अद्‌भुत अभ्यास, (पड़ोसियों ने बताया है कि कई बार तो नींद में भी-ओहो! आहा! हा धिक! छि धिक! तथा आऊच'! जैसी ध्वनियों का उच्चारण करता हूँ) अवसर के अनुसार चरण चाँपने तथा जूता खड़काने जैसी क्रियाओं के द्वारा उद्योग की गतिविधियों में उचित उतार-चढ़ाव पैदा कर सकना; गली-गली, द्वार-द्वार तथा सरे-बाजार घूम-घूमकर वोट माँग सकना (एक बार तो यह भावना इतना जोर पकड़ गई थी कि चुनाव परिणाम घोषित होने के दो-तीन दिन बाद वोट मांगता रहा था); विरोधी को शोक-सभा में अपनी हार्दिक खुशी तो दबाते हुए अंसुआए चेहरे से और अपनी हार के दुख को दबाकर मुस्कराते चेहरे से बोल सकता। कुल मिलाकर अत्यंत नाटकीय व्यक्तित्व।

10. शौक (हॉब्बीज)-

(क) **चंदा इकट्ठा करना**, खास कर जाली रसीदों पर (ख) **राष्ट्रीय सम्पत्ति अपनी ही सम्पत्ति है'** के सिद्वांन्त के अनुसार सरकारी सम्पत्ति और कर्ज को नि:संकोच डकार जाना।

महोदय! अगर आपने मुझे सेवा का मौका दिया तो मैं आपको पक्का विश्वास दिलाता हूँ कि अपने कल्याण में ही उद्योग का कल्याण समझते हुए बड़ी लगन से कार्य करुँगा। उद्योग-हति को सर्वोपति मानते हुए बुढ़ापा आने पर भी रिटायर होने में मेरी दिलचस्पी बिल्कुल नहीं है, इसलिए सेवा मृत्युपर्यन्त जारी रहेगी।

मान्यवर! अंत में इतना और जोड़ दूँ कि मेरे व्यक्तित्व में कई पशुओं का व्यक्तित्व भी समाया हुआ है। अगर आपने मुझे अपने राजनीति-उद्योग में काम करने का मौ दिया तो आपके प्रति मेरी स्वामिभक्ति देखकर आपके अलसेसियन **जैकी** का सिर भी चक्कर खा जाएगा। बोझ ढोने की हिम्मत देखकर आपके किसी भी गधे का हार्टफेल होने की नौबत आ जाएगी। बिना कुछ खाए-पिए कई-कई दिन तक काम करने की शक्ति देखकर ऊँट के पाँव भी डगमगा जाएँगे। इतना ही नहीं, आप मुझे कितना ही डांटे-फटकारें, मेरी खाल गेंडे की खाल से ज्यादा मजबूत साबित होगी।

सर! हो सकता है, अर्जी में मेरी अभूतपूर्व विशेषताएँ देखकर आपको इस बात में ज्यादा लाभ दिखाई दे कि धंधा साझेदारी में चलाया जाए। ऐसी हालत में मुझे भी कम खुशी नहीं होगी। मैं तो पहले ही संकल्प कर चुका हूँ कि आपके इस कमाऊ उद्योग की जमकर 'सेवा' करते हुए जीवनभर 'मेवा' प्राप्त करुँ। - *आपका अपना - पैंतरेबाज*

- डॉ. पूर्णसिंह डबास (मो. 9818211771)

"वेद का पढ़ना-पढ़ना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"
महर्षि दयानन्द जी के इस वचन को पूरा करने के लिए और परमात्मा की पावन वाणी को हर घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से चारों वेदों की ओडियो डी.वी.डी. तैयार की गई है। यह कार्य विश्च में इतिहास में पहली बार हुआ है जबकि चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) को ऑडियो डी.वी.डी. में डेढ़ वर्ष के कठिन परिश्रम तथा उच्च कोटि के विद्वानों के निरीक्षण में अत्यन्त सावधानी पूर्वक तैयार किया गया है। **362 घंटे** की इस डीवीडी पर 1000/- रुपये लागत आ रही है जबकि वेदों को हर घर तक पहुंचने के उद्देश्य से यह **डीवीडी मात्र 500/- रुपये** की सहयोग राशि में उपलब्ध कराई जा रही है। वेद का प्रचार-प्रसार करना ऋषियों ने परम पुरुषार्थ माना है। अतः इसी समय चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-

वैदिक प्रकाशन विभाग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोन - 011-23360150, 9540040339

पं. सत्यपाल पथिक एवं श्री उपाध्याय जी का अभिनन्दन

हिण्डौन (राज0) सम्पन्न द्विवसीय यज्ञीय उत्सव में आर्य जगत के गौरव प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्य पाल पथिक का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया तथा उन्हें एक लाख एक रु. (रु. 1,00,001-) का चेक भेंट किया गया। वैदिक प्रवक्ता राजेन्द्र आर्य ने बताया कि पथिक जी द्वारा लिखे गये एक हजार से अधिक भजनों के संग्रह का विमोचन भी किया गया। इसी अवसर पर वैदिक विद्वान श्री शिवनारायण उपाध्याय जी का सम्मान स्वयं पथिक जी ने किया। कोटा से बड़ी संख्या में आर्यजन इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए जिनमें मुख्य आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के उपप्रधान श्री हरिदत्त शर्मा, आर्य समाज कोटा जं. के प्रधान श्री सूरजमल त्यागी, मन्त्री श्री ओमदत्त गुप्ता, आर्य परिवार संस्था के प्रधान श्री प्रेम नाथ कौशल, खेड़ा रसूलपुर के श्री मेरुलाल आर्य, उपस्थित रहे।

वानप्रस्थ साधक आश्रम गुजरात में योग शिविर सुसम्पन्नवानप्रस्थ साधक आश्रम गुजरात में योग शिविर सम्पन्न

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में ०६ अप्रैल से १३ अप्रैल २०१४ तक ८ दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें देश के १०-१२ प्रान्तों से पधारे २०० शिविरार्थियों ने भाग लिया।

शिविर में योगदर्शन (कैवल्यपाद), वेदान्तदर्शन के सूत्रो प्रकाश व विवके वैराग्य अभ्यास के कुछ अंशो का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवके-वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर-समर्पण, स्व-स्वामि सम्बन्ध (ममत्व) को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर मार्गदर्शन तथा शंका-समाधान किया गया तथा व्यक्तिगत उपासना, दर्शन, उपनिषद्, योग में विघ्न, विवेक-वैराग्य के श्लोकों तथा संध्या और यज्ञ के मन्त्रों का उच्चारण व अर्थ, आत्मनिरीक्षण आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया। शिविर की दिनचर्या प्रातः ४.०० से रात्रि ९.३० बजे तक चलती थी। जिसमें पूर्ण कालिक मौन व्रत का पालन करना होता था।

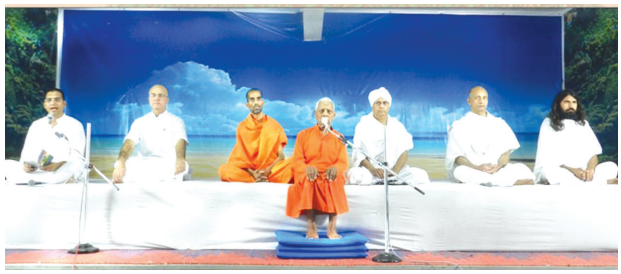

शिविर के समापन समारोह के अवसर पर शिविरार्थियों को अपना आशीर्वाद एवं उद्बोधन देते स्वामी सत्यपति जी महाराज

शिविर में पूज्य स्वामी सत्यपति जी, आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी आर्य, आचार्य सत्यजित् जी, आचार्य संदीप जी, स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य अजय जी, ब्र. अरूण कुमार जी आर्यवीर, श्री चन्द्रेश जी आर्य, आचार्य सोमदेव जी आदि प्रशिक्षकों ने अनेक विषयों से सम्बन्धित कक्षाएँ लीं। शिविर के अंत में शिविरार्थियों ने अपने अनुभवों को सुनाया तथा गुणों को ग्रहण तथा दोषों को छोड़ने सम्बन्धी व्रतों को धारण किया।

शिविर के भोजन एवं आवास आदि की उत्तम व्यवस्था करने में आश्रम के सर्व ब्रह्मचारीगण, श्री जशुभाई पटेल तथा श्री राजेश जी पारेख और उनके सहयोगियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

109 वर्षीय स्वामी सर्वानन्द जी का अभिनन्दन एवं आर्यसमाज खेड़ा खदान का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

राजस्थान से लगे मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में मंदसौर जिले के पिपलिया मंडी के खेडा खदान ग्राम में वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः व रात्रि में भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल, श्री शंकरमित्र वेदालंकार, श्री कमल किशोर आर्य के सुमधुर भजन तथा श्री आनंद पुरुषार्थी जी का सिद्धांत विषयक उपदेश हुए। अंतिम दिन १९ वेदियों पर ४८ दम्पतियों द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। इस अवसर पर 109 वर्षीय पूज्य स्वामी श्री सर्वानन्द जी (लुधियाना) का अभिनन्दन किया गया। इस पूरे क्षेत्र में आप के आशीर्वाद से अनेक आर्य समाजे स्थापित हुई है। श्री स्वामी जी ने ६५ वर्षों से अनाज का सेवन नहीं किया है। अभी भी नित्य दिनचर्या में आप निरालस्य रहते है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गाँधी, श्री लालबहादुर शास्त्री, पंडित जवाहर लाल नेहरु, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि अनेकों जानी-मानी शख्शियत के साथ स्वामी जी कार्य कर चुके हैं।

- रामसिंह आर्य, मन्त्री

109 वर्षीय स्वामी श्री सर्वानन्द जी को शॉल ओढ़ाकर एवं प्रशस्तिपत्र देकर अभिनन्दन किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन श्री शिव नरायण पाटीदार ने किया।

।। ओ३म्।।

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

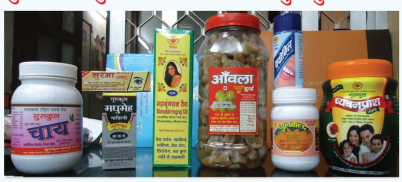

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
आपकी अपनी फार्मेसी

प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्वयनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभ्रंगराज तैल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

मांसाहार उचित या अनुचित?

- डॉ. विवेक आर्य

प्रोफेसर आर्य एवं मौलाना साहिब की भेंट आज बाजार में हो जाती है। मौलाना साहिब जल्दी में थे बोले - ईद आने वाली है इसलिए कुरबानी देने के लिए बकरा खरीदने जा रहा हूँ। आर्य साहिब के मन में तत्काल उन लाखों निर्दोष बकरों, बैलों, ऊँटों आदि का ख्याल आया जिनकी गर्दनों पर अल्लाह के नाम पर तलवार चला दी जाएगी। वे सब बेकसूर जानवर धर्म के नाम पर कत्ल कर दिए जायेंगे। आर्य जी से रहा न गया और वे मौलाना साहिब से बोले- यह कुरबानी मुस्लमान लोग क्यों देते हैं? यूँ तो मौलाना जल्दी में थे पर जब इस्लाम का प्रश्न हो तो समय निकल ही आया। अपनी लम्बी बकरा दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोले- इसके पीछे एक पुराना किस्सा है। हजरत इब्राहिम से एक बार सपने में अल्लाह ने उनकी सबसे प्यारी चीज यानि उनके बेटे की कुरबानी मांगी, अगले दिन इब्राहिम जैसे ही अपने बेटे इस्माइल की कुरबानी देने लगे तभी अल्लाह ने उन के बेटे को एक मेदे में तब्दील कर दिया और हजरत इब्राहिम ने उसकी कुरबानी दे दी। अल्लाह उन पर बहुत मेहरबान हुआ और बस उसके बाद से हर साल मुस्लमान इस दिन को बकर ईद के नाम से मनाते हैं और इस्लाम को मानने वाले बकरा, मेदा, बैल आदि की कुरबानी देते हैं और उस बकरे के मांस को गरीबों में बांटा जाता है जिससे पुण्य मिलता है।

आर्य जी- जनाब अगर अनुमति हो तो मैं कुछ पूछना चाहता हूँ? मौलाना जी - बेशक से।

आर्य जी- पहले तो यह कि बकरे का असली मतलब गाय होता है न कि बकरा फिर बकरे, बैल, ऊँट आदि की कुरबानी क्यों दी जाती है? दूसरे बकर ईद के स्थान पर इसे गेंहू ईद कहते तो अच्छा होता क्योंकि एक किलो गोश्त में तो दस किलो के बराबर गेंहू आ जाता है और वह न केवल सस्ता पड़ता है अपितु खाने के लिए कई दिनों तक काम आता है। आपका यह हजरत इब्राहिम वाला किस्सा कुछ कम जँच रहा है क्योंकि अगर इसे सही माने तो अल्लाह अत्याचारी होने के साथ साथ क्रूर भी साबित होता है।

आज अल्लाह किसी मुस्लमान के ख्वाबों में कुरबानी की प्रेरणा देने के लिए क्यों नहीं आते और आज के मुसलमानों को भी क्या अल्लाह पर विश्वास नहीं है कि वे अपने बेटों की कुरबानी नहीं देते बल्कि एक निरपराध पशु के कत्ल के गुनाहगार बनते हैं। यह संभव ही नहीं है क्योंकि जो अल्लाह या भगवान प्राणियों की रक्षा करता हैं वह किसी के सपने में आकर उन्हें मारने की प्रेरणा देगा। मुस्लमान लोगो की बुद्धि को क्या हो गया है। अगर हजरत इब्राहिम को किसी लड़की के साथ बलात्कार करने को अल्लाह कहते तो वे उसे नहीं मानते तो फिर अपने इकलोते लड़के को मारने के लिए कैसे तैयार हो गए? मुसलमानों को तत्काल इस प्रकार का कत्लेआम बंद कर देना चाहिए। मुसलमानों की सबसे पाक किताब कुरान-ए-शरीफ के अल हज २२:३७ में कहा गया है न उनके मांस अल्लाह को पहुँचते हैं और न उनके रक्त, किन्तु उसे तुम्हारा तकवा (धर्मपारायणता) पहुँचता है। यही बात अल-अनआम ६: ३८ में भी कही गयी है। हदीसों में भी इस प्रकार के कई प्रमाण मिलते है। यहाँ तक कि मुसलमानों में सबसे पवित्र समझी जाने वाली मक्का की यात्रा पर किसी भी प्रकार के मांसाहार यहाँ तक कि जूं तक को मारने की अनुमति नहीं होती है तो फिर अल्लाह के नाम पर इस प्रकार कत्लेआम क्यों होता है?

मौलाना जी- आर्य जी यहाँ तक तो सब ठीक है पर मांसाहार करने में क्या बुराई है?

आर्य जी -पहले तो शाकाहार विश्व को भुखमरी से बचा सकता है। आज विश्व की तेजी से फैल रही जनसंख्या के सामने खाने की बड़ी समस्या है। एक कैलोरी मांस को तैयार करने में १० कैलोरी के बराबर शाकाहारी पदार्थ की खपत हो जाती है अगर सारा विश्व मांसाहार को छोड़ दे तो धरती के सीमित संसाधनों का उपयोग अच्छी प्रकार से हो सकता है और कोई भी भूखा नहीं रहेगा क्योंकि दस गुना मनुष्यों का पेट भरा जा सकेगा। अफ्रीका में तो कई मुस्लिम देश भुखमरी के शिकार हैं। अगर ईद के नाम की जकात में उन्हें शाकाहारी भोजन दिया जाये तो कईयों का पेट भर जायेगा। दूसरे मांसाहार बीमारियों की जड़ हैं। इससे दिल के रोग, गोउट, कैंसर जैसे अनेको रोगों की वृद्धि देखी गयी हैं और एक मिथक यह हैं की मांसाहार खाने से ज्यादा ताकत मिलती है इसका प्रबल प्रमाण पहलवान सुशील कुमार हैं जो विश्व के नंबर एक पहलवान हैं और पूर्ण रूप से शाकाहारी हैं। आपसे ही पूछते हैं कि क्या आप अपना मांस किसी को खाने देंगे? नहीं ना तो फिर आप कैसे किसी का मांस खा सकते हैं।

मौलाना -आर्य जी आप शाकाहार की बात कर रहे हैं क्या पौधों में आत्मा नहीं होती है, क्या उसे खाने से पाप नहीं लगता है, महान वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बासु के मुताबिक तो पौधों में जान होती है।

आर्य जी- पौधों में आत्मा की स्थिति सुषुप्ति की होती है अर्थात सोये हुए के समान, अगर किसी पशु का कत्ल करे तो उसे दर्द होता है, वो रोता है, चिल्लाता है मगर किसी पौधे को कभी दर्द होते, चिल्लाते नहीं देखा जाता, जैसे कोमा के मरीज को दर्द नहीं होता है उसी प्रकार पौधों को भी उखाड़ने पर दर्द नहीं होता है। उसकी उत्पत्ति ही खाने के लिए ईश्वर ने की है। जगदीश बासु का कथन सही है कि पौधों में प्राण होते हैं पर उसमे आत्मा की क्या स्थिती है और पौधों को दर्द नहीं होता है इस बात पर वैज्ञानिक मौन हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात हैं कि शाकाहारी भोजन प्रकृति के लिए हानिकारक नहीं है।

मौलाना - परन्तु हिन्दुओ में कोलकाता की काली और गुवाहाटी की कामख्या के मंदिर में पशु बलि दी जाती है और तो और वेदों में भी हवन आदि में तो पशु बलि का विधान है।

आर्य जी- जो स्वयं अंधे हैं वे दूसरों को क्या रास्ता दिखायेंगे? हिन्दू जो पशु बलि में विश्वास रखते हैं खुद ही वेदों के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। पशु बलि देने से केवल और केवल पाप लगता है, भला किसी को मारकर आपको सुख कैसे मिल सकता है। जहाँ तक वेदों का सवाल है मध्यकाल में कुछ अज्ञानी लोगों ने हवन आदि में पशु बलि देना आरंभ कर दिया था और उसे वेद संगत दिखाने के लिए महीधर, सायण आदि ने वेदों के कर्मकांडी अर्थ कर दिए जिससे पशु बलि का विधान वेदों से सिद्ध किया जा सके। बाद में मैक्समूलर, ग्रिफीथ आदि पाश्चात्य लोगों ने उसका अंग्रेजी में अनुवाद कर दिया जिससे पूरा विश्व यह समझे की वेदों में पशु बलि का विधान है। आधुनिक काल में ऋषि दयानन्द ने जब देखा की वेदों के नाम पर किस प्रकार से घोर प्रपंच किया गया है तो उन्होंने वेदों का एक नया भाष्य किया जिससे फैलाई गयी भ्रांतियों को मिटाया जा सके। देखो वेदों में पशु आदि के बारे में कितनी सुंदर बात कहीं गयी हैं- ऋग्वेद ५/५१/१२ में अग्निहोत्र को अध्वर यानि जिसमे हिंसा की अनुमति नहीं है कहा गया है।

यजुर्वेद १२/३२ में किसी को भी मारने से मनाही है। यजुर्वेद १६/३ में हिंसा न करने को कहा गया है। अथर्ववेद १९/४८/५ में पशुओं की रक्षा करने को कहा गया है। अथर्ववेद ८/३/१६ में हिंसा करने वाले को मारने का आदेश है। ऋग्वेद ८/१०१/१५ में हिंसा करने वाले को राज्य से निष्काषित करने का आदेश है।

इस प्रकार चारो वेदों में अनेको प्रमाण हैं जिनसे यह सिद्ध होता हैं की वेदों में पशु बलि अथवा मांसाहार का कोई वर्णन नहीं है।

मौलाना जी - हमने तो सुना है कि अश्वमेध में घोड़े की, अजमेध में बकरे की, गोमेध में गो की और नरमेध में आदमी की बलि दी जाती थी।

आर्य जी- आपकी शंका अच्छी है। मेध शब्द का अर्थ केवल मात्र मरना नहीं हैं, मेधावी शब्द का प्रयोग जिस प्रकार से श्रेष्ठ अथवा बुद्धिमान के लिए किया जाता हैं उसी प्रकार से मेध शब्द का प्रयोग श्रेष्ठ कार्यों के लिए किया जाता है। शतपथ १३/१/६/३ एवं १३/२/२/३ में कहा गया है कि जो कार्य राष्ट्र उत्थान के लियें किया जाये उसे अश्वमेध कहते हैं , निघंटु १/१ एवं शतपथ १३/१५/३ के अनुसार अन्न को शुद्ध रखना, संयम रखना, सूर्य की रौशनी से धरती को शुद्ध रखने में उपयोग करना आदि कार्य गोमेध कहलाते हैं। शांति पर्व ३३७/१-२ के अनुसार हवन में अन्न आदि का प्रयोग करना अथवा अन्न आदि की उत्पादन क्षमता को बढाना अजमेध कहलाता है, मनुष्य के मृत शरीर का उचित प्रकार से दाह कर्म करना नरमेध कहलाता है।

मौलाना जी- हमने तो सुना है कि श्री रामजी मांस खाते थे एवं महाभारत वनपर्व २/७ में रांतिदेव राजा ने गाय को मारने की अनुमति दी थी।

आर्य जी- रामायण , महाभारत आदि पुस्तकों में उन्हीं लोगों ने मिलावट कर दी हैं जो हवन में पशुबलि एवं मांसाहार आदि मानते थे। वेद स्मृति परंपरा से सुरक्षित हैं इसलिए वेदों में कोई मिलावट नहीं हो सकती उसमे से एक शब्द अथवा एक मात्रा तक को बदला नहीं जा सकता। रामायण में सुंदर कांड स्कन्द ३६ श्लोक ४१ में स्पष्ट कहा गया हैं कि श्री राम जी मांस नहीं लेते वे तो केवल फल अथवा चावल लेते हैं। महाभारत अनुशासन पर्व ११५/४० में रांतिदेव को शाकाहारी बताया गया है। शांति पर्व २६२/४७ में गाय और बैल को मारने वाले को पापी कहा गया है। इस प्रकार के अन्य प्रमाण भी मिलते हैं जिनसे यह भी सिद्ध होता है कि रामायण एवं महाभारत में मांस खाने की अनुमति नहीं है और जो भी प्रमाण मिलते हैं वे सब मिलावट हैं।

मौलाना जी- तो क्या आर्य जी हमें

- शेष पृष्ठ 8 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्रदेश

5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के

आचार्य स्वदेश जी

प्रधान बनें

आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. के सम्बन्ध में केस सं. 916/2013 एवं 1067/2013 जोकि उच्च न्यायालय इलाहाबाद में चल रहे है में निर्णय देते हुए न्यायाधीश श्री सुनील अम्बवानी एवं न्यायाधीश डॉ. सतीश चन्द्रा ने आचार्य स्वदेश जी को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान के रूप में मान्यता प्रदान की। आचार्य स्वदेश जी के नेतृत्व में गठित कार्यकारिणी में मन्त्री - श्री भुवन तिवारी एवं कोषाध्यक्ष - श्री वक्स सिंह को मान्यता दी गई है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से जी ने आचार्य स्वदेश जी एवं उनकी टीम में समस्त अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

- ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान

रामगली आर्यसमाज हरिनगर घंटाघर नई दिल्ली का 41वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रामगली आर्यसमाज हरी नगर घंटाघर का 41वाँ वार्षिकोत्सव 11,12,13 अप्रैल 2014 को ऋग्वेद के चतुर्थ मंड़ल की पूर्णाहुति ग्यारह कुण्डीय यज्ञ करके की गई। जिसके ब्रह्मा महात्मा रामकिशोर, ऋत्विज् आचार्य अशोक शास्त्री जी थे। इस अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए यज्ञाग्नि के विषय मे चर्चा की व बच्चों को संस्कारित करने पर बल दिया। मधुर भजन संगीत पंड़ित सोमदेव शास्त्री व हरीशंकर गुप्ता जी व आचार्य श्यामदेव शास्त्री जी के उपदेश प्रवचन हुए। मुख्य अतिथि सुश्री अल्पना शर्मा, प्रधानाचार्य, आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर ने इस आर्य समाज की वयोवृद्व बहिन श्रीमती मायादेवी वर्मा जी को प्रशस्ति पत्र व शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। प्रधान श्रीमति राजेश्वरी आर्या ने मुख्य अतिथि सुश्री अल्पना शर्मा जी का शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। अन्तिम दिन श्री देवराज आर्यमित्र ने श्रोताओं से प्रश्न पूछे ठीक उत्तर देने वालों को 50 रुपये नकद पुरस्कार दिया गया। - **श्रीपाल आर्य, मन्त्री**

प्रवेश सूचना

आर्य विद्या सभा सलखिया जिला रायगढ़ (छत्तीसगढ़) द्वारा संचालित वेद पाठशाला केन्द्र शासन से मान्यता प्राप्त वेद विद्यालय में प्रवेश आरम्भ हैं। सात वर्षीय पाठ्यक्रम स्सवर वेद पाठ का प्रशिक्षण संस्कृत, गणित, विज्ञान, आर्षग्रंथों एवं अंग्रेजी के अध्यापन सहित। सभी व्यवस्थाएं नि:शुल्क (भोजन, आवास, वस्त्र, औषधी व साहित्य) प्रदान की जाती है। वृद्धाश्रम वृद्धों की सेवा हेतु वृद्ध आश्रम नि:शुल्क व्यवस्था के साथ संचालित (भोजन, आवास, वस्त्र, औषधि आदि) सेवा का अवसर प्रदान करें।

-त्रिनाथ आर्य, प्रधानाचार्य,
08959754147

आर्यसमाज पंखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव समारोह

24 अप्रैल से 27 अप्रैल, 2014

प्रभातफेरी - 21, 22, 23 अप्रैल
समय : प्रात: 5 बजे से 7 बजे
यज्ञ : प्रतिदिन प्रात: 6 से 9 बजे
ब्रह्मा : डॉ. प्रणव देव आर्य
भजन : डॉ. कैलाश कर्मठ
प्रवचन : डॉ. वेदपाल

समापन समारोह : 27 अप्रैल, 2014
प्रात: 7:30 से दोपहर 1 बजे
आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

- अजय तनेजा, मन्त्री

युवा वर्ग के लिए विशेष संगोष्ठी का आयोजन

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

दिनांक : 27 अप्रैल, 2017
आर्यसमाज सै. 7, रोहिणी, दिल्ली-85
समय : सायं 5 से 6:30 बजे
वक्ता : डॉ. विवेक आर्य
भाग लेने या अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
- आकाश बंसल (9899824108)

आर्यसमाज भिवाडी का द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज भिवाड़ी का द्वितीय वार्षिक उत्सव दिनांक 28 से 30 मार्च तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस त्रिदिवसीय समारोह में लगभग 260 नये यज्ञमानों ने यज्ञापवीत धारण करके यज्ञ में भाग लिया। प्रतिदिन सुबह 5.30 बजे से 7 बजे तक डॉ. पी. राणा के नेतृत्व में योग प्राणायाम में लगभग 250-250 पुरुषो व महिलाओं ने योग व्यायाम करके लाभ उठाया। दोपहर दो बजे से शाम 5 बजे तक आचार्य स्वदेश जी मीमांसक कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन मथुरा व आर्य प्रतिनिधि सभा उ0 प्र0 के प्रधान ने वेद विद्या व राष्ट्र चर्चा व हिन्दुस्तान के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए लागों हिन्दुत्व को बचाने की शिक्षा दी।

आचार्य अमरमुनि, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने कहा संस्कृत से संस्कार और संस्कार से सुख मिलता है अच्छी तरह देख समझ लो, ठीक रहना है तो वेदों की तरफ लौटें। आचार्य दीपमाला स्मारिका ने वैदिक भजनों को सुनाकर लोगो का वैदिक गीतो व संगीत के बारे मे समझाया व विमल देव अग्निहोत्री जी भारतीय सस्त सभ्यता पर बहुत अच्छे गीत भजन सुनाए।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में लगभग 1500 लोगों नें लाभ उठाया। इस कार्यक्रम में तिजारा क्षेत्र में विधायक मामन यादव व भिवाड़ी के चेयरमैन- संदीप दायमा, देवेश पचौरी, मोहन आर्य, शिकार सिंह आर्य, जयदेव आर्य, ओ३म् प्रकाश आर्य, पदमचन्द आर्य, रतना आर्य, आशीष सुरजीत आर्य, हरेन्द्र आर्य, सेवाराम यादव व क्षेत्र में सभी साधक साधिकाए सैंकड़ो की संख्या में सामिल थे।

- जयदेव आर्य, मन्त्री

शोक समाचार

श्री देवराज आर्य को पत्नीशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान श्री देवराज आर्य समाज की सहधर्मिणी श्रीमती मधु आर्या जी का 61 वर्ष की आयु में 27 फरवरी 2014 को निधन हो गया। वे अपने पीछे अपने पति एवं दो सुपुत्र मेजर निशान्त और श्री प्रभाष आर्य का भरापूरा परिवार छोड गयी हैं। वे भेल (हरिद्वार) में अभियन्ता के पद पर कार्यरत थीं। फरवरी 2013 में दुर्घटनाग्रस्ट होने के कारण वे नार्वे चली गई। किन्तु वहां पुन: दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण पुन: भारत वापस आ गई। यहाँ उनका पर्याप्त उपचार किया गया लेकिन वह बच नहीं सकी। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज ज्वालापुर में आयोजित हुई जिसमें प्रो0 महावीर अग्रवाल, श्री हजारीलाल, श्री ज्ञानचन्द्र गुप्त, श्री रणजीत सिंह वर्मा, श्री श्रद्धानन्द बाल वनिया आश्रम के अधिष्ठाता, श्री ओ. पी. नागिया, डॉ. श्याम सिंह आर्य, श्री दयानन्द तिवारी, डा. सत्यप्रकाश गुप्त, श्री ए. सी. ओहरी, श्री मनोज कुमार गोयल, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के प्रधान श्री यशपाल सचदेवा, श्री ओ. पी. बत्रा, श्री जगदीश विरमानी, श्री प्रेमलता आर्या ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पत्रकार श्री चन्द्रमोहन आर्य को मातृशोक

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता एवं पत्रकार श्री चन्द्रमोहन आर्य जी की माताजी एवं आर्य समाज सेक्टर-७ की कर्मठ सदस्या, यज्ञप्रेमी श्रीमती ओमारानी जी का 12 अप्रैल, 2014 को 76 वर्ष की अवस्था में हृदयगति रुक जाने से अकस्मात् निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उसी दिन पंजाबी बाग स्थित श्मशान घाट पर किया गया। वे अपने पीछे तीन पुत्रों एवं एक सुपुत्री का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। स्व. श्रीमती ओमा रानी के पिता ढोला राम विज्ञानी ने पाकिस्तान स्थित मुल्तान से हरिद्वार ज्योत लाते थे।

उनकी माता बसों बाई जरुरतमंदों को नि:शुल्क दवाईयां देती थी। श्वसुर महाशय रामचंद्र रेलन, सास परमेश्वरी देवी आर्य समाज के कार्यों में अग्रणी रही। पति महाशय जुगल किशोर आर्य उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान रहे, उन्होंने आर्य समाज पुलबंगश में निर्धन विद्यार्थियों का संरक्षण गृह बनाया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज रोहिणी सै. - 7 में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों एवं अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैडी 500 ग्राम	160/-	9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-
(सूखा मुरब्बा) 1 किलो	286/-	10. महाभ्रंगराज तेल 250ग्राम	206/-
2. च्वयनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-		
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-		
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-		
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-		
8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-		

सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।

- महामन्त्री

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339 (श्री विजय आर्य)

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 14 अप्रैल, 2014 से रविवार 20 अप्रैल, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17/18 अप्रैल, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 अप्रैल, 2014

पृष्ठ 3 का शेष

अनोखा व्यक्तित्व : डॉ. भीमराव....

आपके जीवन का सन्देश यही प्रतीत होता है कि प्रत्येक व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों में रहते हुए भी अपनी शैक्षिक योग्यता बढ़ानी चाहिये। असत्य, पाखण्ड व कुरीतियों का विरोध करना चाहिये। देश व समाज के लिए जितना भी बन सके उसकी उन्नति में अपना योगदान देना चाहिये। असत्य के आगे झुकना नहीं चाहिये। उनके जन्म दिन पर सबसे बड़ी श्रद्धाजंलि यही हो सकती है कि देश व समाज से सामाजिक असमानता, छुआ–छूत, अस्पर्शयता, ऊंचनीच की भावना, छोटे–बड़े का अन्तर पूर्णतया समाप्त होना चाहिये। जब तक यह असमानता विद्यामान है, यह नहीं कहा जा सकता कि देश उन्नति कर रहा है व हम आधुनिक समय में है। जिन लोगों के कारण यह असमानता आदि है, उन्हें अपने कर्त्तव्य को पहचानना है और इसके लिए सच्चे मन से कार्य करना है। इस कार्य में हम सम्प्रति शिथिलता अनुभव करते हैं। वेद मानव को परमात्मा प्रदत्त ज्ञान है। वहां कहा गया है कि सभी मनुष्य ईश्वर के पुत्र व पुत्रियां है, कोई छोटा–बड़ा नहीं है। अज्ञानता के कारण हम गल्तियां करते हैं जिनसे हम कमजोर होते हैं और देश व समाज पर संकट आते हैं। हम अनुभव करते हैं कि सत्य को ग्रहण करने व असत्य को छोड़ने में हमें सदा उद्यत रहना है। अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करनी है, सभी मनुष्यों को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं होना है अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। ये विचार वेदों से आये हैं। यदि सभी लोग वेदों का स्वाध्याय कर अपना कर्त्तव्य निर्धारित करें तो श्रेष्ठ समाज बन सकता है। सामाजिक विषमता व असमानताओं से रहित समाज बना कर ही हम डॉ. भीमराव रामजी अम्बेदकर को उनके जन्म दिवस पर सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हम समझते हैं कि सामाजिक समानता का लक्ष्य एक न एक दिन पूरा होना ही है। उसी दिन इस पृथिवी का आधुनिक काल कहलायेगा। वेदों की ऐसा समाज बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। श्री अम्बेदकरजी को हमारी श्रद्धांजलि।– ***196, चक्खूवाला–2, देहरादून (उत्तराखण्ड) – 248001***

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 6 का शेष

किसी को भी मारने की इजाजत नहीं है।

आर्य जी– बिलकुल मौलाना साहिब यहाँ तक कि कुरान के उस अल्लाह को ही मानना चाहिए जो अहिंसा, सत्य, प्रेम, भाईचारे की बात करे कुरबानी, मारना, जलना, घृणा करना, पाप करना आदि सिखाने वाली बातें ईश्वरकृत नहीं हो सकती।

हदीस जद अल–माद में इब्न कय्यिम ने कहा है कि "गाय के दूध–घी का इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि यह सेहत के लिए फायदेमंद है और गाय का मांस सेहत के लिए नुकसानदायक है।"

मौलाना जी– आर्य जी आपकी बातों में दम बहुत हैं और साथ ही साथ वे मुझे जंच भी रही हैं। अब मैं कभी भी जीवन भर मांस नहीं खाऊंगा, ईद पर बकरा नहीं काटूँगा और साथ ही साथ अपने अन्य मुस्लिम भाइयों को भी इस सत्य के विषय में बताऊंगा। आर्यजी सही रास्ता दिखने के लिए आपका अत्यंत धन्यवाद।

प्रथम पृष्ठ का शेष

उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने भी सभा को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम में कुल सचिव प्रो. विनोद कुमार, मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल, मा. रामपाल, स्वामी कर्मपाल, स्वामी यज्ञमुनि, स्वामी प्रणवानन्द, सहायक मुख्याधिष्ठाता जयप्रकाश विद्यालंकार, डॉ राजकुमार रावत, प्रो0 राजेन्द्र अग्रवाल, गिरधारी लाल चंदवानी, प्रो0 श्रवन शर्मा, प्रो0 ब्रह्ममदेव, डा0 प्रदीप जोशी, प्रो0 अम्बुज शर्मा, कुलभूषण, ब्रह्मपाल सिंह, सत्यप्रसाद भट्ट, ज्ञानप्रकाश शास्त्री, डा0 संगीता विद्यालंकार समस्त प्राध्यापक, कर्मचारी तथा छात्र उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. दिनेश शास्त्री तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो. विनोद शर्मा ने किया।

– ***जन सम्पर्क अधिकारी***

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर